Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

आर्षग्रन्थों में शाप और वरदान की अवधारणा

डॉ.भोला नाथ
असि.प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गनपत सहाय पी.जी. कालेज, सुल्तानपुर, उ.प्र.

Article Info
Volume 5, Issue 2

Page Number : 80-83

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Received : 01 March 2022
Published : 17 March 2022

शोध-सारांश : शाप और वरदान वह सत्य वचन है, जिसका अनुसरण प्रकृति स्वयं करती है। सत्य सिद्ध होने पर वाणी अचूक हो जाती है। वाणी जब सत्य में प्रतिष्ठित हो जाती है तब वाक् सिद्धि होती है। सामान्य जनों की वाणी अर्थ के पीछे चलती है जबकि वाक् सिद्धि होने से ऋषियों की वाणी का अनुसरण अर्थ स्वयं करता है। वाक् सिद्धि वाक्संयम तथा तप की ऊर्जा पर आश्रित होती है। सत्य वचन से उन्नत लोकों की तथा असत्य वचन से अधम लोकों की प्राप्ति होती है। शाप में दोनों पक्ष दु:खी तो वरदान में दोनों पक्ष सुखी होते हैं। शाप और वरदान कर्म होने से कर्मफल की प्राप्ति सुनिश्चित होती है।

मुख्य शब्द : शाप, वरदान, आर्षग्रन्थ, सत्यवचन, कर्मफल, ऋषि, लोक आदि।

शाप शब्द शप् धातु से घञ् प्रत्यय करने पर बनता है जिसका अर्थ है आक्रोश, अभिशाप, भ्रत्स्ना, कसम, मिथ्या आरोप इत्यादि यथा – संमोचित: सत्त्ववतात्वयाहं। शापाच्चिरप्रार्थितदर्शनेन॥[1] ऋग्वेद में शाप का अर्थ जल किया गया है यथा– 'प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति'[2] सायणाचार्य ने इस पंक्ति की व्याख्या करते हुए कहा है– नद्यो गंगाद्या: सरित: प्रतीपं प्रतिकूलं शापं उदकं वहन्ति। वरं शब्द वृ वरणे धातु से कर्म अर्थ में अप् प्रत्यय करने से बनता है। व्रियते इति वरम् अर्थात् जो वरण किया जाता है उसे वर कहते हैं।

रामायण का प्रारंभ ही शाप से होता है। देवर्षि नारद द्वारा उपदिष्ट धर्मात्मा ऋषि वाल्मीकि के तमसा नदी पर स्नान के लिए जाते समय निषाद द्वारा मारे गये क्रौञ्च नर को देखकर उनके मन में करूणा उत्पन्न हुई। जिसके कारण ऋषि वाल्मीकि ने निषाद को अभिशप्त किया–

मा निषाद प्रतिष्ठाम त्वमगम: शाश्वती समा:। यत् क्रौञ्च मिथुनादेकम अवधी: काममोहितम् ॥[3]

कुशनाभ की कन्याओं का कथन है कि देवता होने पर भी आप को शाप देकर वायु पद से भ्रष्ट कर सकती हूँ किन्तु ऐसा करना नहीं चाहती क्योंकि हम अपने तप को सुरक्षित रखना चाहती हैं।[4] इसका तात्पर्य है कि शाप और वरदान देने के लिए तप की ऊर्जा कार्य करती है। शाप और वरदान देने पर तपोबल का क्षय होता है। महाभारत के अन्त में गांधारी ने श्रीकृष्ण को वंशविनाश का शाप दिया कि जिस प्रकार इस युद्ध में मेरा वंश नष्ट हो गया। उसी प्रकार आज से 36 वर्ष बाद आपके यदुवंश का विनाश हो जाएगा। श्रीकृष्ण ने हंसते हुए होनी समझकर उस शाप को स्वीकार कर लिया।[5] इससे ज्ञात होता है कि शाप और वरदान भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्व कथन होता है। जो कि प्रकृति से जुड़ा हुआ व्यक्ति ही बता सकता है। पतञ्जलि योग दर्शनम् में उल्लेख है कि लम्बे समय तक सत्य वचन बोलने से सत्य सिद्ध

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हो जाता है। सत्य सिद्ध होने पर वाणी अचूक हो जाती है। साधक जैसा कहता है वैसा ही हो जाता है,'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्'।[6]

शाप को वापस नहीं लिया जा सकता है। क्योंकि ऐसा करने का तात्पर्य है कि अपनी ही बात को असत्य सिद्ध करना। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल में ऐसा ही दर्शाया है। ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को शाप दे देते हैं कि जिस व्यक्ति को अनन्य मन से याद करती हुई मुझ पूज्य अतिथि का तिरस्कार कर रही हो। वह तुम्हें भूल जायेगा। याद दिलाने पर भी तुम्हें स्मरण नहीं करेगा। बाद में शकुन्तला की दोनों सखियां अनुनय विनय करती हैं तो ऋषि दुर्वासा अपने शाप का समाधान भी बताते हैं कि याद दिलाने के लिए कोई वस्तु प्रयोग किया जायेगा तो वहीं यह शाप समाप्त हो जायेगा।[7]

शाप और वरदान के ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं कि ये दोनों कभी–कभी इस जन्म फलित न होकर दूसरे जन्म में फलित होते हैं। वरदान भी शाप की तरह दु:खदायी सिद्ध होता है। दु:खदायी होकर भी वरदान प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपने आराध्य के वचन को सत्य सिद्ध किया है। द्रौपदी के विवाह के समय वेदव्यास ने द्रुपद नरेश को पूर्व जन्म में प्राप्त शिव के वरदान को स्मरण दिलाया।[8] फिर भी द्रौपदी ने पांच पाण्डवों के साथ विवाह करके शिव के वचन को सत्य सिद्ध किया और शिव के आशीर्वाद की भागीदार बनीं। ऐसा माना जाता है कि शाप और वरदान के वचन असत्य होने पर, देने वाले पुरुष को अधम लोकों की प्राप्ति होती है। अपने चहेते को अधम लोक की प्राप्ति न हो इसके लिए प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लेते थे। रामायण में राम ने दशरथ का वचन असत्य न हो इसके लिए उन्होंने दु:ख पूर्ण वनवास जीवन को स्वीकार कर लिया और पिता दशरथ को उन्नत लोकों की प्राप्ति हुई।

शाप और वरदान कर्मेन्द्रिय वाक् पर आश्रित होने से कर्म के अन्तर्गत आते हैं। वरदान में दूसरा पक्ष खुश होने से पुण्यकर्म के अन्तर्गत आता है। वहीं शाप में दूसरा पक्ष दु:खी होने से पाप कर्म के अन्तर्गत आता है। इसलिए वरदान देने वाले पुरुष का वरदान सत्य होने पर भी उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्योंकि कर्म से चित्त शुद्ध होता है और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति। हां यदि ये दोनों अनाशक्त भाव से किए जाएं तो मोक्ष में बाधक भी नहीं बनते हैं। दशरथ का वचन सत्य होने के बाद भी उन्हें इन्द्रलोक की प्राप्ति हुई।[9] अत: सत्य बोलने का फल इन्द्रलोक की प्राप्ति है। शाप वरदान के प्रसंगों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वरदान हमेशा खुश होकर दिया जाता है और शाप हमेशा क्रोध की स्थिति में ही दिया जाता है। कभी–कभी ये दोनों परिस्थितियां एक साथ घटित हो जाती हैं। छद्म वेशधारी इन्द्र का अहल्या के साथ समागम को देखकर गौतम मुनि ने इन्द्र और पत्नी अहल्या को शाप दे दिया कि तुम पत्थर बन जाओ। क्रोध शान्त होने पर उन्होंने यह भी वरदान दिया कि त्रेतायुग में राम तुम्हारा उद्धार करेंगे।[10]

कई प्रसंग ऐसे भी प्राप्त होते हैं जब वरदान प्राप्त करने वाले के लिए वह वरदान ही शाप सिद्ध होता है। भस्मासुर की कथा इसका प्रबल उदाहरण है। कभी ऐसा भी होता है कि शाप आगे चलकर वरदान बन जाता है। नल और नील दोनों भाइयों को बचपन में शाप मिला था कि वे जो भी वस्तु पानी में फेकेंगे वह वस्तु तैरने लगेगी। बाद में यही शाप उनके लिए वरदान बन गया और रामेश्वरम सेतु के निर्माण में काम आया।[11]

भवभूति ने एक प्रसंग में कहा है कि लौकिक पुरुषों की वाणी अर्थ के अनुसार चलती है। लेकिन ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है। अर्थात ऋषियों की वाणी का अनुसरण प्रकृति स्वयं करती है। युद्धकाण्ड 124 वें सर्ग के अनुसार भगवान् राम लंका से अयोध्या लौटते समय भारद्वाज आश्रम पर उतरकर महर्षि से मिले और महर्षि प्रसन्न होकर श्रीराम को वर प्रदान किया था। वर रूप में भगवान् ने इस प्रकार इच्छा प्रकट किया कि अयोध्या जाते समय उनके मार्ग में आने वाले वृक्ष फलित हो जाएं। ऐसा ही हुआ।[12]

वरदान प्राप्ति के लिए हमेशा योग्यता देखी जाती है। जो व्यक्ति जिस योग्य होता है वैसा ही वरदान उसे दिया जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं कि जब साधक को मनोवांछित वर की प्राप्ति नहीं होती है। योग्यता होने पर ही वर प्रदान किया जाता है। कठोपनिषद् में यमराज को लगा कि नचिकेता आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य नहीं है। उन्होंने नचिकेता को अनेक प्रलोभन देकर बहलाने की कोशिश की। अनेक इन्द्रिय सुख देने का प्रलोभन दिया। लेकिन नचिकेता ने क्षणभंगुर समझकर सबका त्याग कर दिया। नचिकेता के त्याग से प्रसन्न होकर स्वेच्छा से एक अतिरिक्त वरदान दे दिया। कि अब यह अग्नि तुम्हारे ही नाम से जानी जायेगी। जब यमराज नचिकेता की योग्यता की परीक्षा कर लिए तभी नचिकेता को आत्मज्ञान का उपदेश किए।[13]

ऐसा भी देखा गया है कि वरदान देने वाला तीन वरदान से ज्यादा नहीं देता। स्वेच्छा से दे वह अलग बात है। लेकिन मांगने वाले को तीन ही वरदान मांगने की अनुमति प्रदान की जाती है। इसका एक कारण यह बताया जाता है कि भू: भुव: स्व: तीन ही लोक होते हैं। वरदान देने वाले को यह आशंका रहती है कि तीन वरदान में यदि तीनों लोक मांग लिया तो चौथे वरदान के लिए अवकाश नहीं रहेगा और वाणी असत्य हो जायेगी। इसीलिए यमराज ने तीन रात्रियों को आधार बनाकर तीन ही वर नचिकेता को दिये।

निष्कर्ष- शाप ऋषि मुनियों के मुख से निकला हुआ वह सत्य वचन होता है जिसका प्रकृति अनुसरण करती है। इस प्रकार शाप को महर्षि जन प्राय: एक शस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं। शाप में दोनों पक्ष दु:खी होते हैं शाप देने वाला भी और प्राप्त करने वाला भी। जबकि वरदान में दोनों पक्ष प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार रामायण और महाभारत में प्राप्त शाप और वरदान के प्रसंगो से इनकी प्रकृति और विशेषताओं का स्पष्टी करण होता है। शाप और वरदान देने के लिए तप की ऊर्जा कार्य करती है। शाप और वरदान देने पर इस तपोबल का क्षय होता है। लम्बे समय तक सत्य वचन बोलने से सत्य सिद्ध हो जाता है। सत्य सिद्ध होने पर वाणी अचूक हो जाती है। साधक जैसा कहता है वैसा ही हो जाता है। शाप को वापस नहीं लिया जा सकता है। क्योंकि ऐसा करने का तात्पर्य है कि अपनी ही बात को असत्य सिद्ध करना। ये दोनों कभी-कभी इस जन्म में फलित न होकर दूसरे जन्म में फलित होते हैं। कभी-कभी वरदान भी शाप की तरह दु:खदायी सिद्ध होता है। शाप और वरदान के वचन असत्य होने पर देने वाले पुरुष को अधम लोकों की प्राप्ति होती है। शाप और वरदान कर्मेन्द्रिय वाक् पर आश्रित होने से कर्म के अन्तर्गत आते हैं। वरदान में दूसरा पक्ष खुश होने से पुण्यकर्म कर्म के अन्तर्गत आता है। वहीं शाप में दूसरा पक्ष दु:खी होने से पाप कर्म के अन्तर्गत आता है। इसलिए वरदान देने वाले पुरुष का वरदान सत्य होने पर भी उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्योंकि कर्म से चित्त शुद्ध होता है और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति। हां यदि ये दोनों अनाशक्त भाव से किए जाएं तो मोक्ष में बाधक भी नहीं बनते हैं। वरदान हमेशा खुश होकर दिया जाता है और शाप हमेशा क्रोध की स्थिति में ही दिया जाता है। कभी-कभी ये दोनों परिस्थितियां एक साथ घटित हो जाती हैं। भवभूति ने शाप और वरदान की अवधारणा को संक्षेप में स्पष्ट कर दिया है कि लौकिक पुरुषों की वाणी अर्थ के अनुसार चलती है। लेकिन ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है। अर्थात ऋषियों की वाणी का अनुसरण प्रकृति स्वयं करती है।

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।। (उत्तररामचरितं 1.10)

अभी तक प्राप्त उदाहरणों से यही स्पष्ट होता है कि याचक अधिकतम तीन ही वरदान प्राप्त करने का अधिकारी होता है। इसका एक कारण यह बताया जाता है कि भू: भुव: स्व: तीन ही लोक होते हैं। शाप और वरदान देने के लिए योगबल का होना आवश्यक है। यह योगबल तपस्या, इन्द्रिय संयम, वाणी संयम आदि से प्राप्त होता है।

संदर्भ-

1–रघुवंश–5.56

2–ऋग्वेद 10.28.4

3–रामायण, बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक–15

4–रामायण, बालकाण्ड, सर्ग–32, श्लोक–20

5–महाभारत, स्त्रीपर्व, अध्याय–25, श्लोक, 40–50

6–पातञ्जलयोगदर्शनम्, साधनपाद, सूत्र–36, व्यास भाष्य, योगसिद्धि हिन्दी व्याख्या, सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी.

7–ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किन्त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, अंक–4

8–महाभारत, आदिपर्व, अध्याय–196, श्लोक–47

9–रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग–119 श्लोक–7

10–रामायण, बालकाण्ड, सर्ग–48, श्लोक –27–32

11–रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग–22, श्लोक–46

12–रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग–124, श्लोक–19

13–कठोपनिषद् 1.1.15

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रेस गोरखपुर, सचित्र हिन्दी अनुवाद सहित, संस्करण (PDF)
2. महाभारत, वेदव्यास, अनुवादक– रामनारायणदत्त शास्त्री, गीताप्रेस गोरखपुर (PDF)
3. उत्तररामचरितम्, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद, संस्करण, 2016.
4. रघुवंश महाकाव्य, मोतीलाल बनारसी दास, हिन्दी अनुवाद – आचार्य धारादत्त मिश्र, प्रथम संस्करण, 1974 (PDF)
5. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली संस्करण, 2002.